# भजन

तर्ज :– लग जा गले, कि फिर ये हसीं रात

अपने पिया की रूहों को, पहचान क्यों ना हो
पहचान करके फिर वो, कुरबान क्यों ना हो
1.) जिनको मिला है धाम का, ये इलम बेशकी
सो रूह टूक टूक, हुये बिन ना रह सकी
वाणी वचन से मोमिन, गलतान क्यों ना हो
पहचान करके फिर वो.

2) धनिये दिया है खोल, खजाना अखंड का
क्योंकि है उनसे तो मेरा, सम्बन्ध अर्श का
उन पर यकीन और ईमान क्यों ना हो
पहचान करके फिर वो.

3.) निर्मल हुये बिना कोई, पहुंचे ना धाम में
जब लों मगन हुई नहीं, धनी श्यामा शाम में
हक पर फना ये जीव और ये प्राण क्यों ना हो
पहचान करके फिर वो.